© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 624-629

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की युवा समस्याओं का अध्ययन

पूनम शाक्या
जे0आर0एफ0
शोधछात्रा (शिक्षाशास्त्र)
वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय,
जौनपुर (उ0प्र0)

शोध आलेख सार– प्रस्तुत अध्ययन ''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की युवा समस्याओं का अध्ययन'' है। इस अध्ययन में स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के युवा समस्या की विमा पारिवारिक, सामाजिक एवं विद्यालय सम्बन्धी समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन की समस्या, उद्देश्य एवं परिकल्पना को ध्यान में रखते हुए शोध अध्ययन हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का अनुसरण किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में प्रयागराज जिले के शहरी क्षेत्र में स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों की उपलब्धता की दृष्टि से आकस्मिक न्यादर्श विधि द्वारा 4 विद्यालयों का चयन किया जायेगा। तात्पश्चात् यादृच्छिक न्यायदर्शन विधि द्वारा प्रत्येक विद्यालय से 50–50 छात्र–छात्राओं का चयन अर्थात् कुल 100 छात्रों का चयन किया जायेगा। स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की समस्याओं के मापन हेतु एम. वर्मा द्वारा निर्मित यूथ प्रॉब्लम इन्वेन्ट्री वाई पी आई) का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–टेस्ट का प्रयोग किया गया है। स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत पारिवारिक, सामाजिक एवं विद्यालयी सम्बन्धी समस्याएँ एक–दूसरे के समान है अर्थात् कोई अन्तर नहीं है जबकि मध्यमानों के आधार पर छात्राओं में युवा समस्याएँ छात्रों की अपेक्षा उच्च है।

की–वर्ड– स्नातक स्तर, विद्यार्थियों, युवा समस्या।

प्रस्तावना

शिक्षा एक अमूल्य निधि है बिना शिक्षा के व्यक्ति का जीवन निरर्थक है। समाज मेहर वर्ग के लोग रहते हैं, सभी के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण हैं। व्यक्ति और समाज एक दूसरे के पूरक है। व्यक्ति समाज में रहकर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है और अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है परन्तु इस लक्ष्य की प्राप्ति में सामाजिक कारक मुख्य भूमिका निभाते है। जो इस प्रकार है– धर्म, जाति, परिवार, विद्यालय एवं पड़ोस आदि।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर ही हमारा बहुमुखी विकास होता है और जन्म के उपरान्त से ही मनुष्य के ऊपर उसकी संस्कृति, जाति, शिक्षा, सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रभाव उसके व्यवहार तथा आचरण पर पड़ता है। हमारा भौतिक पर्यावरण दिन–प्रतिदिन परिस्कृत होता जा रहा है। वहाँ देखें तो आजादी के बाद से ही सामाजिक समस्याओं ने भारतीय समाज को घेर रखा है। कुशल सामाजिक जीवन का विकास करने तथा स्वास्थ्य समाज की नींव रखने के लिये कुशल नागरिकों का निर्माण किया जा सकेगा। इस प्रस्तुत शोध के माध्यम से इस प्रश्न के सुझावात्मक उत्तर प्राप्त हो सकेंगे।

आधुनिक परिवेश में प्रत्येक वर्ग के लोगों और माता–पिता इस बात के लिए प्रयत्नशील है कि उसकी संतान को समुचित शिक्षा मिल सके यहाँ तक कि शिक्षा प्राप्त करना आज एक सामाजिक प्रतिष्ठा का विषय बन गया है। आज शासन व समाज की कटु आलोचना की जा रही है जिसका प्रभाव हमारे छात्र/छात्राओं के सामाजिक व्यवहार तथा संवेगों पर प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। अतः छात्र/छात्राओं के शैक्षिक स्तर में किस प्रकार से सुधार किया जाय इस विषय पर अध्ययन किया जानना आज की आवश्यकता है, क्योंकि असमानता का प्रमुख कारण क्षेत्रीय विकास में कमी है। आज भी ऐसा स्थान है जहाँ माता–पिता अशिक्षित है, विद्यालयों की कमी है, छात्राओं के पढ़ने के अवसर नहीं है।

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 624-629

स्त्री–पुरुष में भेदभाव, शैक्षिक अवसरों की असमानता इसकी मुख्य कमियाँ है। जिसके फलस्वरूप आज चाँद की ऊँचाईयों तक जा कर भी हम कहीं न कहीं पिछड़े हुए है। अवसर की समानता प्रदान करना शिक्षा का महत्वपूर्ण सामाजिक उद्देश्य है। विभिन्न सामाजिक वर्गों को समान शैक्षिक सुविधाएँ किस प्रकार प्रदान की जाये यह वर्तमान शिक्षा की एक ज्वलन्त समस्या है।

आज इसकी आवश्यकता अनुभव की जा रही है जो सभी को समान शैक्षिक अवसर उपलब्ध करायें शिक्षा का समान अधिकार सबको मिले।

भारत एक लोकतांत्रिक देश है। लोकतन्त्र हमारे सामाजिक एवं राजनैतिक व्यवस्था का अभिन्न अंग है। लोकतांत्रिक व्यवस्था का यह प्रयास होता है कि वह अपने मूल्यों को जीवित रखे तथा उनका विकास एवं परिमार्जन भी करता चले। जनतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के लिये और प्रत्येक नागरिक को सामाजिक न्याय दिलाने के लिये सभी को शिक्षा के समान अवसर सुलभ कराने होंगे। इससे किसी भी जाति, धर्म, लिंग, सामाजिक– आर्थिक स्थिति पर भेद नहीं होगा। लोकतांत्रिक समाज का यह भी प्रयास होगा कि बहुमूल्य प्रतिभाओं को शिक्षा के माध्यम से ढँढे, उन्हें विकास के अवसर प्रदान करें। इसके लिए आवश्यक है कि सभी जाति वर्ग के व्यक्तियों के सामाजिक व्यवहार का विधिवत अध्ययन किया जाये ताकि उनमें जो असन्तुलन उत्पन्न हो गया है उसे वर्तमान शोध के माध्यम से कुछ सीमा तक दूर किया जा सके।

आज की युवा पीढ़ी की समस्याएँ सबसे ऊपर है जो बेरोजगारी के मार्ग से गुजर रहा है। इतनी मँहगाई में माता–पिता एवं परिवार को बच्चों को पढ़ाने में काफी दिक्कतें आ रही है। विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय की इतनी मँहगी पढ़ाई होती जा रही है जिससे युवाओं को आगे पढ़ने में काफी दिक्कते हो रही है। आज की देखावटी समाज में युवाओं का खर्च बढ़ा दिया जैसे मोबाइल, मोटर साइकिल, लैपटाप, बड़े–बड़े होटल में घूमना इत्यादि खर्च इतने बढ़ गये है उनको उस वातावरण में अपने को समाहित करने में दिक्कत हो रही है। एक दूसरे के देखा–देखी आज की युवा अपने को उच्च पैसे वालों से आगे रखना चाह रही है इसके लिए उन्हें पैसों की जरूरत होती है इन्हीं जरूरतों को पूरा करने के लिए आज की युवा पीढ़ी पढ़ाई को छोड़कर नौकरी के पीछे भाग रही है। इन सभी समस्याओं को देखते हुए शोधार्थी ने इस विषय पर शोध करने की आवश्यकता हुई।

समस्या कथन–

''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की युवा समस्याओं का अध्ययन''।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं :–

1. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत्युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत पारिवारिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत सामाजिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत विद्यालय सम्बन्धी समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या का तुलनात्मक अध्ययन करना।

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 624-629

परिकल्पनाएँ –

प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है–

1. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत पारिवारिक समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत सामाजिक समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत विद्यालय सम्बन्धी समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन की समस्या, उद्देश्य एवं परिकल्पना को ध्यान में रखते हुए शोध अध्ययन हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का अनुसरण किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में प्रयागराज जिले के शहरी क्षेत्र में स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों की उपलब्धता की दृष्टि से आकस्मिक न्यादर्श विधि द्वारा 4 विद्यालयों का चयन किया जायेगा। तात्पश्चात् यादृच्छिक न्यायदर्शन विधि द्वारा प्रत्येक विद्यालय से 50–50 छात्र–छात्राओं का चयन अर्थात् कुल 100 छात्रों का चयन किया जायेगा। स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की समस्याओं के मापन हेतु एम. वर्मा द्वारा निर्मित यूथ प्रॉब्लम इन्वेन्ट्री वाई पी आई) का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–टेस्ट का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्त विश्लेषण एवं निर्वचन–

1. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत पारिवारिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

सारणी सं0 1

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत पारिवारिक समस्याओं का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात

क्र0 सं0	न्यादर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	$D=(M_1 \sim M_2)$	δ_D	टी–अनुपात	सारणी मान
1.	छात्र	50	22.42	8.52	3.00	1.59	1.87	1.98 df=98
2.	छात्राएँ	50	25.42	7.41				

व्याख्या–

उपर्युक्त सारणी 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत पारिवारिक समस्याओं का मध्यमान क्रमशः 22.42 एवं 25.42 तथा मानक विचलन क्रमशः 8.52 एवं 7.41 परिगणित टी–अनुपात का मान 1.87 है। मुक्तांश 98 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.98 है। अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणीमान से कम है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

अतः शोध अध्ययन की परिकल्पना स्वीकृत होती है। अतः *स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत पारिवारिक समस्याओं में अन्तर नहीं है अर्थात्* स्नातक स्तर पर अध्ययनरत्

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 624-629

छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत पारिवारिक समस्याओं में समानता है जबकि मध्यमानों के आधार पर छात्राओं की पारिवारिक समस्याएँ (25.42) जो छात्रों (22.42) की पारिवारिक समस्याओं की अपेक्षा उच्च है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत पारिवारिक समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है जबकि मध्यमानों के आधार पर छात्राओं में पारिवारिक समस्याएँ छात्रों की अपेक्षा उच्च है।

2 स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत सामाजिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

सारणी सं0 2

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत सामाजिक समस्याओं का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात

क्र0 सं0	न्यादर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	D= (M_1~M_2)	δ_D	टी–अनुपात	सारणी मान
1.	छात्र	50	4.30	2.97	0.58	0.53	1.10	1.98 df=98
2.	छात्राएँ	50	4.88	2.23				

व्याख्या–

उपर्युक्त सारणी 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत सामाजिक समस्याओं का मध्यमान क्रमशः 4.30 एवं 4.88 तथा मानक विचलन क्रमशः 2. 97 एवं 2.23 परिगणित टी–अनुपात का मान 1.10 है। मुक्तांश 98 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.98 है। अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणीमान से कम है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

अतः शोध अध्ययन की परिकल्पना स्वीकृत होती है। अतः *स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत सामाजिक समस्याओं में अन्तर नहीं है अर्थात्* स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत सामाजिक समस्याओं में समानता है जबकि मध्यमानों के आधार पर छात्राओं की सामाजिक समस्याएँ (4.88) जो छात्रों (4.30) की सामाजिक समस्याओं की अपेक्षा उच्च है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत सामाजिक समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है जबकि मध्यमानों के आधार पर छात्राओं में सामाजिक समस्याएँ छात्रों की अपेक्षा उच्च है।

3 स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत विद्यालयी समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

सारणी सं0 3

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत विद्यालयी समस्याओं का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात

क्र0 सं0	न्यादर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	D= (M_1~M_2)	δ_D	टी–अनुपात	सारणी मान
1.	छात्र	50	13.58	7.05	2.48	1.24	2.00	1.98 df=98
2.	छात्राएँ	50	16.06	5.21				

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 624-629

व्याख्या–

उपर्युक्त सारणी 3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत विद्यालयी समस्याओं का मध्यमान क्रमशः 13.58 एवं 16.06 तथा मानक विचलन क्रमशः 7.05 एवं 5.21 परिगणित टी–अनुपात का मान 2.00 है। मुक्तांश 98 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.98 है। अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणीमान से अधिक है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है।

अतः शोध अध्ययन की परिकल्पना स्वीकृत होती है। अतः *स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत विद्यालयी समस्याओं में सार्थक अन्तर है अर्थात्* स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की विद्यालयी समस्याएँ छात्रों की अपेक्षा उच्च है। मध्यमानों के आधार पर छात्राओं की विद्यालयी समस्याएँ (13.58) जो छात्रों (16.06) की विद्यालयी समस्याओं की अपेक्षा उच्च है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत विद्यालयी समस्याओं में सार्थक अन्तर है जबकि मध्यमानों के आधार पर छात्राओं में विद्यालयी समस्याएँ छात्रों की अपेक्षा उच्च है।

4 स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत पारिवारिक, सामाजिक एवं विद्यालयी सम्बन्धी समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

सारणी सं0 4

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत पारिवारिक, सामाजिक एवं विद्यालयी सम्बन्धी समस्याओं का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात

क्र0 सं0	न्यादर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	$D=(M_1 \sim M_2)$	δ_D	टी–अनुपात	सारणी मान
1.	छात्र	50	60.16	18.73	5.88	3.48	1.69	1.98 df=98
2.	छात्राएँ	50	66.04	15.91				

व्याख्या–

उपर्युक्त सारणी 4 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत पारिवारिक, सामाजिक एवं विद्यालयी सम्बन्धी समस्याओं का मध्यमान क्रमशः 60.16 एवं 66.04 तथा मानक विचलन क्रमशः 18.73 एवं 15.91 परिगणित टी–अनुपात का मान 1.69 है। मुक्तांश 98 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.98 है। अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणीमान से कम है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

अतः शोध अध्ययन की परिकल्पना स्वीकृत होती है। अतः *स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत पारिवारिक, सामाजिक एवं विद्यालयी सम्बन्धी समस्याओं में अन्तर नहीं है अर्थात्* स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत पारिवारिक, सामाजिक एवं विद्यालयी सम्बन्धी समस्याओं में समानता है जबकि मध्यमानों के आधार पर छात्राओं की पारिवारिक, सामाजिक एवं विद्यालयी सम्बन्धी समस्याएँ (66.04) जो छात्रों (60.16) की पारिवारिक, सामाजिक एवं विद्यालयी सम्बन्धी समस्याओं की अपेक्षा उच्च है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत पारिवारिक, सामाजिक एवं विद्यालयी सम्बन्धी समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है जबकि मध्यमानों के आधार पर छात्राओं में पारिवारिक, सामाजिक एवं विद्यालयी सम्बन्धी समस्याएँ छात्रों की अपेक्षा उच्च है।

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 624-629

निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

- स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत पारिवारिक समस्याएँ एक–दूसरे के समान है।
- स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत सामाजिक समस्याएँ एक–दूसरे के समान है।
- स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत विद्यालयी समस्याएँ एक–दूसरे के समान है।
- स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्याएँ एक–दूसरे से भिन्न है अर्थात् छात्राओं में युवा समस्या छात्रों की अपेक्षा उच्च है।
- स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की युवा समस्या की विमा के अन्तर्गत पारिवारिक, सामाजिक एवं विद्यालयी सम्बन्धी समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है जबकि मध्यमानों के आधार पर छात्राओं में युवा समस्याएँ छात्रों की अपेक्षा उच्च है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गेहलावत, एम0 (2011). ए स्टडी ऑफ ऐडजेस्टमेंट एमंग हाईस्कूल स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू देयर जेंडर। *इन्टरनेशनल रेफरीड रिसर्च जर्नल*, 3(33), 14–15।
2. गनाई, एम0वाई0 एवं मिर, एम0ए0 (2013). ए कम्पैरेटिव स्टडी ऑफ ऐडजेस्टमेंट ऐण्ड एकेडमिक एचिवमेंट ऑफ कॉलेज स्टूडेन्ट्स। *जर्नल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च ऐण्ड एप्से*, 1(1), 5–8।
3. चौहान, वी0 (2013). ए स्टडी ऑन ऐडजेस्टमेंट ऑफ हॉयर सेकेण्ड्री स्कूल स्टूडेन्ट्स ऑफ दुर्ग डिस्ट्रिक्ट। *जर्नल ऑफ रिसर्च ऐण्ड मेथड इन एजूकेशन*, 1(1), 50–52।
4. देवी, एन0 (2011). ए स्टडी ऑफ ऐडजेस्टमेन्ट ऑफ स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू पर्सनॉलिटी ऐण्ड एचिवमेन्ट मोटिवेशन। *भारतीयम इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजूकेशन ऐण्ड रिसर्च*, 1(1), 329–332।
5. A.B. Shah et.al. *Problem of Student of Higher Education in the Maharastra State*, Pune : Student Welfare Association
6. Md Aris Safree Md Yasin & Mariam Adwiah Dzulkifli (2009), "Differences in Phychological Problems between Low And High Achieving Students". The Journal of Behavioral Science, Vol. 4, No. 1, 49-58